International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

जनजातीय परंपरा से आधुनिकता की ओर : दक्षिणी राजस्थान का विकासशील समाज

प्रियंका फलेजा

एम.ए. (समाजशास्त्र)ए एस.बी.पी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालयए डूंगरपुरए गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालयए बांसवाड़ा (राजस्थान)

सारांश

शोध-पत्र का उद्देश्य दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी समाज में विकास के विविध पक्षों का अध्ययन करना हैए विशेषकर शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन की भूमिका को समझना। साथ ही यह देखना भी आवश्यक है कि किस प्रकार परंपरा और आधुनिकता के बीच यह समाज एक नए रूप में उभर रहा है।

कूटशब्द - दक्षिणी राजस्थान, आदिवासी समाज, भीलए गरासियाए मीणाए डामोर, परंपरा और आधुनिकता, सांस्कृतिक धरोहर, प्रकृति पूजा, लोकगीत और नृत्य, लोककला और शिल्प, वनौषधीय ज्ञान, कृषि और पशुपालन, वनोपज, प्रवास/पलायन, शिक्षा और अशिक्षा, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास, पर्यावरणीय संकट, सांस्कृतिक अस्मिता संकट, सतत विकास आदि ।

प्रस्तावना :-

भारत विविधताओं का देश है जहाँ अनेक जनजातियाँ अपनी विशिष्ट परंपराओंए सांस्कृतिक धरोहरों और जीवन-मूल्यों के साथ निवास करती हैं। राजस्थान का दक्षिणी भाग—जिसमें मुख्यतः उदयपुरए डूंगरपुरए बांसवाड़ाए प्रतापगढ़ और सिरोही ज़िले सम्मिलित हैं। जनजातीय समाज की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यहाँ भीलए गरासियाए डामोरए मीणा आदि प्रमुख आदिवासी समुदाय निवास करते हैं। ये समुदाय परंपरागत रूप से प्रकृति-पूजकए कृषि एवं वनों पर आश्रित तथा सामूहिक जीवन-मूल्यों को अपनाने वाले रहे हैं। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् विकास योजनाओंए शिक्षा के प्रसारए स्वास्थ्य सेवाओं और सरकारी हस्तक्षेपों ने इन समुदायों के जीवन में अनेकानेक परिवर्तन लाए। आदिवासी समाज की पारंपरिक जीवन-शैली और आधुनिकता की लहर के बीच उत्पन्न संतुलन ने एक नए सामाजिक ढाँचे का निर्माण किया हैए जिसे हम "विकासशील समाज" कह सकते हैं।

आज दक्षिणी राजस्थान का आदिवासी समाज परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व से गुजर रहा है। एक ओर वे अपनी संस्कृतिए भाषाए लोककला और परंपराओं का संरक्षण करना चाहते हैंए तो दूसरी ओर शिक्षाए नगरीकरण और आधुनिक रोजगार के अवसर उन्हें सामाजिक रूपांतरण की दिशा में अग्रसर कर रहे हैं।

1ण विषय की पृष्ठभूमि एवं महत्व :-

भारत विविधताओं से परिपूर्ण देश हैए जहाँ अनेक जनजातियाँ अपनी विशिष्ट परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहरों के साथ निवास करती हैं। देश की कुल जनसंख्या का लगभग 8ण्6ः भाग अनुसूचित जनजातियों का हैए जिनमें राजस्थान का विशेष स्थान है। विशेषकर दक्षिणी राजस्थान के उदयपुरए डूंगरपुरए बांसवाड़ाए प्रतापगढ़ और सिरोही ज़िले जनजातीय संस्कृति के केंद्र माने जाते हैं। यहाँ निवास करने वाली भीलए गरासियाए मीणाए डामोर आदि जनजातियाँ परंपरागत रूप से कृषिए पशुपालन और वनों पर आधारित जीवन-शैली अपनाती रही हैं। उनके सामाजिक जीवन में प्रकृति पूजाए सामूहिकताए उत्सवए नृत्य और गीतों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकारी योजनाओंए शिक्षा के प्रसार और नगरीकरण की प्रक्रिया ने इनके जीवन में अनेक परिवर्तन लाए। एक ओर ये समाज आधुनिक विकास की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैंए वहीं दूसरी ओर अपनी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखने का संघर्ष भी कर रहे हैं। इस विषय का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें बताता है कि परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाते हुए आदिवासी समाज किस प्रकार एक “विकासशील समाज” के रूप में उभर रहा है।

2. दक्षिणी राजस्थान का भौगोलिक व सामाजिक परिदृश्य :-

;क) भौगोलिक परिदृश्य रू. दक्षिणी राजस्थान अरावली पर्वतमाला से आच्छादितए पहाड़ी और वनों से भरपूर क्षेत्र है। इस भाग में माहीए सोमए जाखम जैसी नदियाँ प्रवाहित होती हैंए जिसके कारण यह क्षेत्र राजस्थान के अन्य भागों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक वर्षा प्राप्त करता है। यहाँ की भूमि कृषि योग्य हैए परंतु अधिकतर क्षेत्र पहाड़ी व बंजर भी है।

;ख) सामाजिक परिदृश्य रू. यह क्षेत्र मुख्यतः जनजातीय आबादी वाला है। भीलए गरासियाए डामोरए मीणा जैसी जनजातियाँ यहाँ की सामाजिक संरचना का आधार हैं।

- सामाजिक जीवन कबीलाई संगठन और गोत्र व्यवस्था पर आधारित है।
- धार्मिक विश्वास प्रकृति पूजा और कुल-देवताओं पर केंद्रित हैं।
- लोकगीतए नृत्य और त्यौहार इनके सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग हैं।
- परंपरागत चिकित्सा और वनौषधियों का ज्ञान यहाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचित होता आया है। आज शिक्षा और नगरीकरण ने इनके सामाजिक जीवन में परिवर्तन प्रारंभ कर दिया हैए किंतु परंपराएँ अभी भी गहरे स्तर पर विद्यमान हैं।

3. शोध का उद्देश्य और प्रासंगिकता -

;क) उद्देश्य

1ण दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी समाज की परंपरागत जीवन-शैली और सामाजिक संरचना का अध्ययन करना।

2ण आधुनिक विकास योजनाओं और शिक्षा के प्रभाव से आए परिवर्तनों की पहचान करना।

3ण शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन की भूमिका को स्पष्ट करना।

4ण आदिवासी समाज की चुनौतियों—जैसे गरीबीए अशिक्षाए पलायनए सांस्कृतिक संकट का विश्लेषण करना।

5ण परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाते हुए सतत विकास की संभावनाओं को रेखांकित करना।

;ख) प्रासंगिकता

- सांस्कृतिक दृष्टि से रू आदिवासी परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में सहायक।
- शैक्षिक दृष्टि से रू शिक्षा के प्रसार और महिला सशक्तिकरण की वास्तविक स्थिति स्पष्ट करना।
- सामाजिक दृष्टि से रू आधुनिकता से प्रभावित विवाहए उत्सव और जीवन-मूल्यों में आए परिवर्तनों का विश्लेषण।
- आर्थिक दृष्टि से रू कृषिए वनोपजए रोजगार और पलायन संबंधी मुद्दों पर प्रकाश डालना।
- नीति-निर्माण की दृष्टि से रू यह अध्ययन योजनाकारोंए समाज सेवियों और सरकार को आदिवासी विकास हेतु मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

4ण दक्षिणी राजस्थान की प्रमुख जनजातियाँ -

दक्षिणी राजस्थान का आदिवासी समाज मुख्यतः **भीलए गरासियाए मीणा और डामोर** आदि विभिन्न जनजातियों पर आधारित है। इनकी सामाजिक संरचनाए रीति-रिवाज और जीवन-शैली इन्हें विशिष्ट पहचान प्रदान करती है।

;क) भील - भील राजस्थान की सबसे बड़ी और प्राचीन जनजाति है। ऐतिहासिक ग्रंथों में भीलों का उल्लेख एक योद्धा एवं धनुर्विद्या में निपुण समुदाय के रूप में मिलता है।[1]

- **सामाजिक संरचना** रू भील समाज गोत्र और कुल-परंपरा पर आधारित है। इनके पारंपरिक नेता 'पटेल' या 'नायक' सामाजिक न्याय और निर्णय में भूमिका निभाते हैं।[2]
- **रीति-रिवाज** रू विवाह प्रथा में सामूहिक भोज और नृत्य-गीत का विशेष महत्त्व है।
- **जीवन-शैली** रू कृषिए शिकार और वनोपज इनके प्रमुख आजीविका साधन रहे हैं। गवरी नृत्य और होली इनके प्रमुख सांस्कृतिक उत्सव हैं।[ङ]

;ख) गरासिया - गरासिया जनजाति सिरोही और उदयपुर क्षेत्र में निवास करती है।

- **सामाजिक संरचना** रू पितृसत्तात्मक व्यवस्था के साथ-साथ महिलाओं को भी सामाजिक मान्यता प्राप्त है।
- **रीति-रिवाज** रू विवाह में 'दापा प्रथा' (वधू मूल्य) प्रमुख है।[4]
- **जीवन-शैली** रू रंग-बिरंगे परिधानए मेलों में गीत-नृत्य और कृषि इनकी पहचान हैं।

;ग) मीणा - मीणा समाज राजस्थान की ऐतिहासिक जनजातियों में से हैए जिनका उल्लेख प्राचीन शिलालेखों में भी मिलता है।

- **सामाजिक संरचना** रू ये लोग गोत्र-आधारित पंचायत व्यवस्था को मानते हैं।
- **रीति-रिवाज** रू विवाहए जन्म और मृत्यु संस्कार सामूहिकता और धार्मिक अनुष्ठानों के साथ संपन्न होते हैं।
- **जीवन-शैली** रू कृषिए पशुपालन और ग्राम्य जीवन इनकी मूल आधारशिला है।[5]

;घ) डामोर- डामोर मुख्यतः डूंगरपुर और बांसवाड़ा ज़िलों में पाए जाते हैं।

- **सामाजिक संरचना** रू डामोर समाज गोत्र-आधारित है और सामूहिकता की भावना इनकी प्रमुख विशेषता है।
- **रीति-रिवाज** रू विवाह एवं अन्य संस्कार लोकगीतों और नृत्य के साथ संपन्न होते हैं।
- **जीवन-शैली** रू कृषि और मजदूरी इनके मुख्य आजीविका साधन हैं। ये लोग रंगीन परिधानों और लोककला के लिए जाने जाते हैं।[6] इन जनजातियों की सामाजिक संरचना सामूहिकता पर आधारित हैए उनके रीति-रिवाज सांस्कृतिक धरोहर के संवाहक हैंए और उनकी जीवन-शैली प्रकृति से गहरे जुड़ी हुई है। आधुनिक शिक्षा और विकास योजनाओं ने इन पर प्रभाव डालना प्रारंभ कर दिया हैए किंतु उनकी परंपराएँ अब भी जीवन का अभिन्न हिस्सा बनी हुई हैं।

5. जनजातीय परंपराएँ और सांस्कृतिक धरोहर - दक्षिणी राजस्थान का आदिवासी समाज अपनी विशिष्ट परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। भीलए गरासियाए मीणा और डामोर जनजातियाँ प्रकृति से गहरे रूप से जुड़ी हुई हैं और उनका सांस्कृतिक जीवन लोकगीतए नृत्यए धार्मिक विश्वासए और लोककला के माध्यम से प्रकट होता है।

(क) धार्मिक विश्वास और प्रकृति पूजा- इन जनजातियों की धार्मिक आस्थाएँ मुख्यतः प्रकृति-पूजा पर आधारित हैं। पेड़ए नदियाँए पर्वतए सूर्य और चंद्रमा की उपासना करना इनके विश्वास का हिस्सा है। इसके साथ ही कुल-देवता और स्थानीय देवी-देवताओं की पूजा भी प्रचलित है। भील समाज में "माता देवला" और "काबा देव" की विशेष पूजा की जाती हैए जबकि गरासिया और डामोर समुदाय मेलों में सामूहिक अनुष्ठान करते हैं।[7]

(ख) उत्सव और पर्व- आदिवासी जीवन उत्सवधर्मी है। होलीए दिवाली और तीज-त्यौहारों के साथ-साथ गवरीए भगोरिया और कागड़िया जैसे स्थानीय पर्व भी मनाए जाते हैं। गवरी नृत्य भील समाज का प्रमुख धार्मिक-नाट्य रूप हैए जिसमें पौराणिक कथाओं का मंचन होता है।[8] भगोरिया उत्सव मेल-मिलाप और सामाजिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाने का माध्यम है।

(ग) लोकगीत और नृत्य- लोकगीत और नृत्य इनके सांस्कृतिक जीवन का आधार हैं। विवाहए जन्म और फसल कटाई जैसे अवसरों पर सामूहिक नृत्य-गान किया जाता है। गरासिया और भील महिलाएँ रंग-बिरंगे वस्त्र पहनकर गोल घेरा बनाकर नृत्य करती हैं।[9] संगीत और नृत्य इनके लिए केवल मनोरंजन का साधन नहींए बल्कि सामाजिक एकता और धार्मिक आस्था का प्रतीक भी है।

(घ) लोककला और शिल्प- आदिवासी समाज की लोककला में चित्रकलाए भितिचित्रए मिट्टी के खिलौने और लकड़ी की नक्काशी का विशेष स्थान है। भीलों द्वारा बनाए गए पिथोरा चित्र उनके धार्मिक विश्वास और जीवन की घटनाओं का चित्रण करते हैं।[10] डामोर और गरासिया समुदाय घर की दीवारों पर प्राकृतिक रंगों से अलंकरण करते हैं।

(ङ) पारंपरिक ज्ञान और औषधि- वनस्पतियों और जड़ी-बूटियों का ज्ञान इन समुदायों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता आया है। पारंपरिक वैद्य (भगत) और ओझा बीमारियों का उपचार लोक-औषधियों और मंत्रों से करते हैं।[11] दक्षिणी राजस्थान का आदिवासी समाज अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर के माध्यम से न केवल अपनी पहचान बनाए हुए हैए बल्कि सामाजिक जीवन में एकताए सहयोग और सामूहिकता की भावना को भी सुदृढ़ करता है। आधुनिकता के प्रभाव के बावजूद यह सांस्कृतिक विरासत आज भी उनकी आत्मा और जीवन का अभिन्न अंग है।

5ण आर्थिक विकास के आयाम -

दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी समाज की अर्थव्यवस्था मुख्यतः **कृषिए पशुपालनए वनोपजए मजदूरी और शिल्पकला** पर आधारित रही है। समय के साथ-साथ सरकारी योजनाओंए सहकारी समितियों और आधुनिक शिक्षा ने उनके आर्थिक जीवन में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है।

;क) कृषि और पशुपालन.

- आदिवासी समाज का प्रमुख आजीविका साधन कृषि हैए किंतु वर्षा पर निर्भर कृषि प्रणाली के कारण उत्पादन सीमित रहा है।[12]
- पारंपरिक फसलें मक्काए ज्वारए बाजरा और तिलहन हैं।
- पशुपालन (गायए भैंसए बकरी) परिवार की आर्थिक सुरक्षा और दूध उत्पादों का स्रोत है।

;ख) वनोपज और प्राकृतिक संसाधन - वनए आदिवासी समाज की अर्थव्यवस्था का आधार हैं।

- महुआए तेंदूपत्ताए शहदए लाख और औषधीय पौधे उनकी आय का स्रोत हैं।[13]

- इन वनोपजों के संग्रह और विक्रय पर आदिवासी परिवार निर्भर रहते हैं। हालांकिए वनों की कटाई और बाहरी व्यापारियों के शोषण से इनकी आय प्रभावित होती रही है।

;**ग) मजदूरी और प्रवास-** खेती में पर्याप्त आय न होने के कारण आदिवासी समुदाय मजदूरी और पलायन को अपनाते हैं।

- निर्माण कार्योंए ईंट-भट्टों और खनिज क्षेत्रों में ये बड़ी संख्या में कार्यरत होते हैं।[14]
- मौसमी प्रवास उनकी आर्थिक अस्थिरता का प्रतीक भी है।

;**घ) शिल्प और हस्तकला-** भील और गरासिया समाज लकड़ी की नक्काशीए मिट्टी के बर्तन और पारंपरिक आभूषण बनाने में दक्ष हैं। ये कलाएँ न केवल सांस्कृतिक पहचान देती हैं बल्कि बाज़ार में उनकी अतिरिक्त आय का साधन भी बनती हैं।

;**ङ) सरकारी योजनाएँ और सहकारी आंदोलन-** आदिवासी क्षेत्रों में *जनजाति उपयोजना (*ज्ैच्द्धए *महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (*डळछत्म्ळ।द्ध, ज।व और सहकारी समितियों ने आर्थिक विकास की दिशा में योगदान दिया है।[15] जिससे सिंचाईए सड़क निर्माण और शिक्षा योजनाओं से आजीविका के अवसर बढ़े हैं। फिर भीए भ्रष्टाचार और संसाधनों के असमान वितरण जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी समाज की अर्थव्यवस्था पारंपरिक साधनों पर आधारित होते हुए भी धीरे-धीरे आधुनिकता की ओर अग्रसर है। कृषिए वनोपज और पशुपालन उनकी आर्थिक रीढ़ हैंए जबकि सरकारी योजनाओं ने नये अवसर प्रदान किए हैं। किंतुए स्थायी विकास हेतु शिक्षाए संसाधनों का समान वितरण और स्थानीय स्वावलंबन आवश्यक है।

7. शिक्षा की स्थिति और चुनौतियाँ - दक्षिणी राजस्थान का आदिवासी समाज लंबे समय तक अशिक्षा और पिछड़ेपन के बंधन में जकड़ा रहा। शिक्षा यहाँ केवल ज्ञान का साधन ही नहींए बल्कि सामाजिक परिवर्तन और विकास की कुंजी है। शिक्षा ने आदिवासी समुदायों को परंपरागत जीवन से आधुनिक समाज की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया है।

;**क) शिक्षा की वर्तमान स्थिति-** बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से आदिवासी अंचलों में शिक्षा का प्रसार हुआ है। सरकारी प्राथमिक विद्यालयोंए आवासीय आश्रमशालाओं और जनजातीय बालिका छात्रावासों ने साक्षरता दर बढ़ाने में योगदान दिया।[1] 2011 की जनगणना के अनुसार दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी जिलों (उदा. डूंगरपुरए बांसवाड़ाए उदयपुरए सिरोही) में आदिवासी साक्षरता दर 55दृ60: के बीच रही।[16] साथ ही युवाओं में उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा की ओर रुझान बढ़ रहा है।

;**ख) शिक्षा के सकारात्मक प्रभाव-** शिक्षा ने आदिवासी युवाओं को सरकारी सेवाओंए व्यवसाय और उद्यमिता की ओर अग्रसर किया है साथ ही महिलाओं में शिक्षा का प्रसार सामाजिक जीवन में जागरूकता और

आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इस प्रकार शिक्षा के कारण जातीय संकीर्णताओं और अंधविश्वासों में भी कमी आई है।

;**ग) चुनौतियाँ और बाधाएँ -** हालांकि शिक्षा के प्रसार में अनेक कठिनाइयाँ अब भी विद्यमान हैं : जैसे-

1ण **भौगोलिक दुर्गमता** दृ पहाड़ी और वन क्षेत्रों में विद्यालयों तक पहुँच कठिन है।

2ण **आर्थिक स्थिति** दृ गरीबी और आजीविका के लिए बच्चों का श्रम में लगना शिक्षा से वंचित करता है।

3ण **भाषायी अवरोध** दृ राजस्थानी और भीली भाषाएँ बोलने वाले बच्चों को हिंदी या अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई कठिन लगती है।

4ण **सामाजिक मानसिकता** दृ विशेषकर कन्या शिक्षा के प्रति प्रारंभिक उदासीनता रही है।

5ण **शिक्षक अभाव और गुणवत्ताहीन शिक्षा** दृ दूरदराज़ स्कूलों में प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी एक बड़ी बाधा है।

;**घ) सरकारी पहल और नवाचार** .

- *आदिवासी आश्रमशालाएँ*ए *एकलव्य आवासीय विद्यालय* और *जनजाति उपयोजना (*जैच्द्ध के अंतर्गत शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है।
- *मिड-डे मील योजना* और *साइकिल योजना* जैसी योजनाओं ने बच्चों की विद्यालय उपस्थिति बढ़ाई है।
- कई स्वयंसेवी संस्थाएँ (छळव्द्ध स्थानीय बोली-भाषा में शिक्षा सामग्री विकसित कर रही हैं।

इस प्रकार दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी समाज में शिक्षा केवल साक्षरता भर नहींए बल्कि समाज को जागृत करनेए परंपराओं को सकारात्मक रूप से पुनर्परिभाषित करने और विकास की धारा में जोड़ने का सशक्त माध्यम है। शिक्षा ने इनके जीवन में नई संभावनाएँ खोली हैंए किंतु वास्तविक सामाजिक-आर्थिक समानता लाने के लिए अब भी सतत प्रयास आवश्यक हैं।

8. आधुनिकता की चुनौतियाँ -

दक्षिणी राजस्थान का आदिवासी समाज जिस तेज़ी से परंपरा से आधुनिकता की ओर बढ़ रहा हैए उसी गति से उसे अनेक नई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। आधुनिकता जहाँ विकास और अवसरों का द्वार खोलती हैए वहीं यह परंपरागत जीवन-मूल्योंए सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संरचना को भी संकट में डालती है।

;**क) गरीबी**ए **अशिक्षा और बेरोजगारी -** आज भी दक्षिणी राजस्थान के अधिकांश आदिवासी परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करते हैं। शिक्षा के सीमित अवसर और कौशल विकास की कमी उन्हें आधुनिक रोजगार-क्षेत्र से दूर रखती है। फलस्वरूप बेरोजगारी और पलायन उनकी सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है। आधुनिक संसाधनों तक पहुँच न होना और आर्थिक असमानता उनकी सामाजिक प्रगति में बाधक है।

;**ख) सांस्कृतिक क्षरण और परंपराओं का लोप-** आधुनिकता के प्रभाव से पारंपरिक रीति-रिवाजए उत्सवए लोकनृत्य और भाषाई विविधता धीरे-धीरे क्षीण हो रहे हैं। युवा पीढ़ी शहरी जीवनशैली की ओर आकर्षित होकर अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कट रही है। यह स्थिति *श्सांस्कृतिक अस्मिता संकट"* को जन्म देती हैए जहाँ आदिवासी समाज अपनी पहचान और विशिष्टता खोने की कगार पर खड़ा दिखाई देता है।[17]

;**ग) पर्यावरणीय संकट और संसाधनों पर दबाव-** दक्षिणी राजस्थान का आदिवासी जीवन प्रकृति-केंद्रित रहा है। किंतु वनों की अंधाधुंध कटाईए खननए औद्योगिकीकरण और जल-संसाधनों का अतिक्रमण उनके जीवन-निर्वाह के आधार को ही चुनौती दे रहा है। इससे न केवल पर्यावरणीय असंतुलन बढ़ रहा हैए बल्कि पारंपरिक आजीविका साधनों पर भी गहरा असर पड़ रहा है।

;**घ) पलायन और विस्थापन की समस्या-** रोज़गार और बेहतर अवसरों की तलाश में आदिवासी समुदाय के लोग बड़े पैमाने पर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। यह पलायन उन्हें नगरीय संस्कृति में ढाल तो रहा हैए परंतु साथ ही सामाजिक असुरक्षाए शोषण और सांस्कृतिक विच्छेदन की समस्या भी पैदा कर रहा है। गाँव-समुदाय से दूर होकर वे अपनी सामूहिकता और पारंपरिक संरचना को खोते जा रहे हैं।

आधुनिकता की ये चुनौतियाँ एक दोधारी तलवार की तरह हैं। एक ओर वे आदिवासी समाज को विकास की मुख्य धारा से जोड़ती हैंए तो दूसरी ओर उनकी परंपराए संस्कृति और जीवन-शैली को संकट में डालती हैं। यदि संतुलित दृष्टिकोण न अपनाया गया तो यह परिवर्तन *श्सामाजिक विघटन"* का कारण भी बन सकता है। इसलिए आवश्यक है कि विकास और आधुनिकता को आदिवासी परंपराओं एवं संस्कृति के संरक्षण के साथ जोड़ा जाए।[8]

9. समाधान एवं संभावनाएँ -

दक्षिणी राजस्थान का आदिवासी समाज अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर के साथ आधुनिकता की ओर अग्रसर है। परंतु आधुनिकता से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान केवल योजनाओं या नीतियों से ही नहींए बल्कि शिक्षाए संस्कृति-संरक्षणए महिला सशक्तिकरण और सतत विकास के समन्वय से ही संभव है। यदि यह संतुलन साधा जाए तो आदिवासी समाज न केवल विकासशील बनेगाए बल्कि अपनी विशिष्ट पहचान भी बनाए रख सकेगा।

;**क) शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रम-** शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति का मूल आधार है। आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार हेतु बहुभाषीय शिक्षणए आवासीय विद्यालय और व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना आवश्यक है। साथ ही आधुनिक तकनीकी शिक्षा तथा कौशल-आधारित प्रशिक्षण (ैापसस क्मअमसवचउमदज) युवाओं को स्वावलंबी बना सकते हैं।

;**ख) महिला सशक्तिकरण और स्व-सहायता समूह-** महिलाओं की भागीदारी के बिना किसी भी समाज का विकास अधूरा है। दक्षिणी राजस्थान में *स्व-सहायता समूहों (ैमस िभ्मसच ळतवनचे)* के माध्यम से महिलाओं

को वित्तीय सहायता और उद्यमिता का अवसर मिल रहा है। शिक्षाए स्वास्थ्य और सामाजिक निर्णयों में उनकी सक्रिय भूमिका सुनिश्चित कर उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त बनाना विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

;**ग) संस्कृति और परंपरा का संरक्षण-** आदिवासी समाज की संस्कृतिए लोक-नृत्यए लोकगीतए लोककथाएँ और भाषाई धरोहर आधुनिकता के प्रभाव से लुप्त होती जा रही हैं। इनके संरक्षण हेतु *लोक-संस्कृति महोत्सवए जनजातीय संग्रहालयए* और *संस्कृति आधारित पर्यटन* ;ब्नसजनतंस ज्वनतपेउद्ध को बढ़ावा देना आवश्यक है। इससे न केवल सांस्कृतिक अस्मिता सुरक्षित रहेगीए बल्कि रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न होंगे।

;**घ) संतुलित व सतत विकास की आवश्यकता-** आदिवासी क्षेत्रों के विकास हेतु *पर्यावरणीय संतुलन* को ध्यान में रखना अनिवार्य है। वनों का संरक्षणए जल-प्रबंधनए और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग सतत विकास की दिशा में मददगार हो सकता है। विकास योजनाओं को *जनजातीय जीवन-शैली* के अनुरूप बनाना ही उनकी वास्तविक प्रगति सुनिश्चित करेगा। इस प्रकार दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी समाज की समस्याएँ जटिल अवश्य हैंए परंतु उनके समाधान की संभावनाएँ भी व्यापक हैं। शिक्षा और कौशल विकासए महिला सशक्तिकरणए सांस्कृतिक संरक्षण और सतत विकास का समन्वय आदिवासी समाज को न केवल मुख्यधारा से जोड़ेगाए बल्कि उसकी सांस्कृतिक अस्मिता को भी सुरक्षित रखेगा। यह प्रयास तभी सफल होगा जब विकास योजनाएँ *श्जनजातीय समाज की भागीदारी”* पर आधारित हों।

निष्कर्ष -

दक्षिणी राजस्थान का आदिवासी समाज एक संक्रमणकालीन दौर से गुजर रहा है। एक ओर उसकी जड़ें परंपरागत संस्कृतिए रीति-रिवाजों और प्रकृति-आधारित जीवन-शैली से जुड़ी हैंए तो दूसरी ओर आधुनिकताए शिक्षा और शहरीकरण की लहर उसे नए अवसरों और चुनौतियों की ओर ले जा रही है। आधुनिकता ने जहाँ शिक्षाए स्वास्थ्यए संचार और रोजगार के नए द्वार खोले हैंए वहीं इससे सांस्कृतिक क्षरणए पलायनए गरीबी और पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। यह स्पष्ट है कि आदिवासी समाज न तो केवल परंपराओं पर निर्भर रह सकता हैए और न ही अंधाधुंध आधुनिकता में समाहित होकर अपनी अस्मिता सुरक्षित रख सकता है। इसलिए आवश्यक है कि विकास की योजनाएँ *जनजातीय समाज की सक्रिय भागीदारी* पर आधारित हों। शिक्षा और कौशल विकासए महिला सशक्तिकरणए परंपरा-संरक्षण और सतत विकास को केंद्र में रखकर यदि नीति-निर्माण किया जाएए तो दक्षिणी राजस्थान का आदिवासी समाज न केवल आर्थिक और सामाजिक रूप से प्रगतिशील होगाए बल्कि अपनी सांस्कृतिक धरोहर को भी सुरक्षित रख सकेगा।

अंततःए दक्षिणी राजस्थान का आदिवासी समाज *श्परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन"* साधते हुए एक **विकासशील समाज** के रूप में उभरने की क्षमता रखता है। यही संतुलन उसकी वास्तविक प्रगति और अस्मिता की रक्षा का आधार बनेगा।

संदर्भ-

1ण् झण्ब्ण् डममदंए *ज्तपइंस स्पमि पद त्ंरंेजींदए* श्रंपचनतरू त्ै।। च्नइसपेीमतेए 2004ए चण् 45ण्
2ण् छण्स्ण् ळनचजंए *ज्तपइंस क्मअमसवचउमदज पद त्ंरंेजींदए* श्रंपचनतरू ।|समी च्नइसपेीमतेए 2002ए चण् 61ण्
3ण् च्ण्ळण् डंजीनतए *ज्तपइंस ैवबपमजल पद प्दकपंए* छमू क्मसीपरू ब्वदबमचज च्नइसपेीपदहए 1993ए चण् 108ण्
4ण् त्ण्छण् ैींतउंए *ज्तपइंस ैवबपमजल पद प्दकपंरू ।द ।दजीतवचवसवहपबंस च्मतेचमबजपअमए* छमू क्मसीपरू डपजजंस च्नइसपबंजपवदेए 2005ए चण् 97ण्
5ण् ठण्स्ण् डमीजंए *जीम डमदंे व िित्ंरंेजींदरू ।ैवबपव.ब्नसजनतंस ैजनकलए* श्रंपचनतरू त्ूंज च्नइसपबंजपवदेए 1998ए चण् 72ण्
6ण् त्ंरंेजींद न्दपअमतेपजलए *।ददनंस त्मचवतज वद ंक्उवत ज्तपइमेए* न्कंपचनतए 2010ए चण् 23ण्
7ण् छण्स्ण् ळनचजंए ज्तपइंस क्मअमसवचउमदज पद त्ंरंेजींदए श्रंपचनतरू ।|समी च्नइसपेीमतेए 2002ए चण् 113.
8ण् त्ण्छण् ैींतउंए ज्तपइंस ैवबपमजल पद प्दकपंरू ।द ।दजीतवचवसवहपबंस च्मतेचमबजपअमए छमू क्मसीपरू डपजजंस च्नइसपबंजपवदेए 2005ए चण् 141.
9ण् च्ण्ळण् डंजीनतए ज्तपइंस ैपजनंजपवद पद प्दकपंए छमू क्मसीपरू ब्वदबमचज च्नइसपेीपदहए 1993ए चण् 168.
10ण् ठण्स्ण् डमीजंए जीम डमदंे व िित्ंरंेजींदरू ।ैवबपव.ब्नसजनतंस ैजनकलए श्रंपचनतरू त्ूंज च्नइसपबंजपवदेए 1998ए चण् 94.
11ण् त्ंरंेजींद न्दपअमतेपजलए ।ददनंस त्मचवतज वद प्दकपहमदवने भ्मंसजी च्तंबजपबमेए न्कंपचनतए 2012ए चण् 37.
12ण् छण्स्ण् ळनचजंए *ज्तपइंस क्मअमसवचउमदज पद त्ंरंेजींदए* श्रंपचनतरू ।|समी च्नइसपेीमतेए 2002ए चण् 147ण्
13ण् च्ण्ळण् डंजीनतए *ज्तपइंस ैपजनंजपवद पद प्दकपंए* छमू क्मसीपरू ब्वदबमचज च्नइसपेीपदहए 1993ए चण् 186ण्
14ण् त्ण्छण् ैींतउंए *ज्तपइंस ैवबपमजल पद प्दकपंरू ।द ।दजीतवचवसवहपबंस च्मतेचमबजपअमए* छमू क्मसीपरू डपजजंस च्नइसपबंजपवदेए 2005ए चण् 174ण्
15ण् त्ंरंेजींद न्दपअमतेपजलए *म्अंसनंजपवद त्मचवतज वद ज्तपइंस ैनइ च्संद पद ैवनजीमतद त्ंरंेजींदए* न्कंपचनतए 2015ए चण् 56ण्
16ण् ब्मदेने व िप्दकपंए *च्तपउंतल ब्मदेने ।इेजतंबज वित त्ंरंेजींद ;2011द्धए* त्महपेजतंत ळमदमतंस व िप्दकपंए छमू क्मसीपए चण् 214ण्
17ण् झण्ब्ण् डममदंए *ज्तपइंस स्पमि पद त्ंरंेजींदए* श्रंपचनतरू त्ै।। च्नइसपेीमतेए 2004ए चण् 97